3) *A.* petere alqd ab aliquo, *c. 2. acc.* R. Schl. I. 34. 29.: पितरन् नो वृणीष्व; MAH. 3. 13583.: वव्रे प्रभुम् अवध्यो भवेयम्. (*Vid.* वर्.)

c. आ eligere. IN. 5. 42.: अनावृतास्र (sic cum ed. Calc. 3. 1858. legendum) सर्वाः स्म. 2) optare, desiderare. RIGV. 17. 1.: इन्द्रवरुणयोर् अहम् ... अव आवृणे «Indrae Varunaeque ego ... auxilium desidero».

c. निस् निर्वृत quietus, felix, laetus (electus). MAN. 1. 54. N. 26. 34.: R. Schl. III. 3. 24.

c. प्र eligere. MAH. 3. 17196.: प्रवृणीष्व यथे ऽच्छसि.

3. वृ 1. *P. A. i. q.* 2. वृ.

c. उत् exposcere. R. Schl. II. 11. 9.: हृदयम् अप्य् उरतत् ... उद्धरस्व मे.

4. वृ 10. *P. A.* वारयामि, वारये arcere, impedire. N. 3. 24.: प्रविशन्तन् न माङ् कश्चिद् अपश्यन् ना ऽप्य् अवारयत्; 13. 51.: तन्नं वारयित्वा; MAN. 4. 59.; R. Schl. I. 1. 49. *Cum ablat.* SA. 2. 29.: नै ऽषा वारयितुं शक्या धर्माद् अस्मात्. (Goth. *varja* prohibeo = वारयामि, v. gr. comp. 109[a]. 6.; nostrum *wehre*; germ. vet. *weriu* 1) cohibeo, defendo, abigo. 2) vestio. - v. 1. वृ tegere, प्रवृ induere; *ga-werida* vestitio, *wari, weri* propulsio, propugnaculum, clypeus etc. (v. Graff. 929. sq.), *werna* obstaculum, repugnantia, *warnôn* monere, dehortari, *bi-warôn* servare (*bewahren*).

c. आ tegere, occulere. R. Schl. I. 32. 11.: आवार्य गगणम् मेघः; N. 12. 19.: आवार्य गुल्मैर् आत्मानम्.

c. नि *id.* N. 7. 11. SA. 4. 25.

c. नि praef. वि *id.* MAH. 1. 1756. 3. 11489.

c. परि circumdare. R. Schl. I. 5. 2.: षष्टिपुत्रसहस्राणि यं यान्तम् पर्यवारयन्; 36. 10. — परिवारित 1) circumdatus. SU. 3. 3. N. 13. 75. 2) indutus. MAH. 3. 2057.: अजिनैः परिवारितम्.

c. परि praef. सम् circumdare. MAH. 3. 10234.

c. प्र 1) tegere. MAH. 3. 10476.: प्रवार्य जन्तुम्. 2) protegere, tueri, servare. R. Schl. II. 77. 15.: प्रवारयसि नः सर्वान्.

c. प्रति arcere, repellere, avertere. A. 7. 17.: शरवर्षैः ... माम् महद्भिः प्रत्यवारयन्; 10. 21.

c. सम् *id.* MAH. 3. 14994.: शरवर्षाणि ... अस्त्रैः संवार्य.

1. वृंह् 1. *P.* (scribitur वृह्, gr. 110[a].) 1) crescere. 2) mugire, rugire, barrire. वृंहित *n.* barritus. AM. *Caus.* augere. MAH. 3. 11334.: वृंहयिष्यामि स्वरवेण रवन् तव. (Cf. वृह्, वृध्; cum *sgf.* rugire cf. gr. ῥέγχω, lat. *rugio.*)

c. उप *Caus.* augere. DEV. 8. 8.: घण्टास्वनेन तन् नादम् ... उपावृंहयत्. — उपवृंहित repletus, plenus, praeditus. BR. 2. 17.: त्वद्गुणैर् उपवृंहिताः; DEV. 2. 53.: देवीशक्त्युपवृंहिताः; MAH. 1. 19.: नानाशास्त्रोपवृंहिताम्.

c. उप praef. सम् *Caus.* augere. MAH. 1. 260.

2. वृंह् 1. et 10. *P.* (भाषार्थे *K.* त्विषि *V.*; scribitur वृह्, gr. 110[a].) loqui, lucere.

वृक् 1. *A.* (आदाने) sumere.

वृक *m.* lupus. (E वर्क (v. gr. min. 12.) unde lith. *wilka-s*, debilitato *a* in *i*, mutato *r* in *l*, russ. *volk*, goth. *vulf-s*, Them. *vulfa*, mutatâ gutt. in lab.; gr. λύκος per metath. ex ὕλκος pro ϝαλκος, correptâ syllabâ ϝα in υ, lat. *lupus* ex *ulpus* pro *ulcus*; hib. *breach, brech*; pers. گرگ *gurk*, mutato *v* in *g*.)

वृकोदर *m.* (*BAH.* e वृक et उदर venter) cognomen *Bhîmi.*

वृज् 1. *A.* (वरणे *K.* वृतौ *V.*) tegere. *Cf.* वृ, वृच्.

वृक्ष *m.* (ut videtur, a r. वृह् crescere suff. *unâd.* स) arbor.

वृच् 7. *P.* (वृतौ) tegere. *Cf.* वृ, वृज्.

1. वृज् 1. *P.* relinquere. (Vid. 2. वृज् et cf. व्रज्, वल्ग्, lat. *vergo*, fortasse *vagor* e *vargor*; goth. *VRAK* persequi (*vrika, vrak, vrêkum*), *vraiqv'-s* curvus, inflexus, obliquus, v. 2. वृज् praef. आ; germ. vet. *wreh* exul, *RAH.* ulcisci; anglo-sax. *vræc, vracu* vindicta; island. vet. *rækr* extorris, *ræki* vindicta (v. Grimm II. 27. Graff I. 1131.); lith. *werźu, iſz-werźu* detraho, subtraho, *werźio-s* urgeo, *in-si-werźu* me intrudo, irrumpo; hib. *fagaim* «I leave, quit, desert, vacate», *fagal* «omission».)